सेमेस्टर II
हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास

a. भाषायी कौशलों का विकास
b. भाषायी कौशलों का महत्व
c. भाषा के कौशल
d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग
f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल
g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास

a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल
b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर
c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर
d. वाचन शिक्षण की विधियाँ
e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

a. लेखन कौशल
b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता
c. लेखन कौशल का महत्व
d. लेखन शिक्षण का समय
e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा
f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर

गद्य एवं पद्य के पाठों में सस्वर वाचन का महत्वपूर्ण स्थान है। प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं में गद्य की पाठ्य-पुस्तकें अलग-अलग नहीं होतीं, किन्तु मौन वाचन का प्रशिक्षण केवल गद्य पाठों द्वारा ही दिया जाता है। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर सहायक पुस्तकें अलग रहती हैं।

Scanned with CamScanner

इन पुस्तकों को पढ़ाते समय द्रुत मौन वाचन का आभास कराने में सरलता रहती है। पद्य पढ़ात समय मौन वाचन नहीं किया जाता, क्योंकि पद्य का उद्देश्य ही रसानुभूति कराना है।

शिक्षण में पहले ही शिक्षक द्वारा आदर्श सस्वर वाचन किया जाता है, फिर बालक उसका अनुकरण वाचन करते हैं। कठिन शब्दों की व्याख्या के बाद ही मौन वाचन सरलता से अर्थ ग्रहण किया जा सकता है। मौन वाचन से पूर्व ही कुछ प्रश्न भी श्यामपट्ट पर लिखे जा सकते हैं जिनका उत्तर मौन वाचन करने के बाद छात्रों से लिए जा सकते हैं। इसी दृष्टि से मौन वाचन करके उत्तर देने के लिए पहले से तैयार रहेंगे और उनका वाचन भी किसी उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होगा।

Scanned with CamScanner